

## केंद्रीय तबिबती राहत समिति

### प्रलिस के लयि:

केंद्रीय तबिबती राहत समिति, टीपीआईई (नरिवासन में तबिबती संसद), शमिला कनवेंशन ।

### मेन्स के लयि:

भारत की तबिबत नीति, भारत के हतिं पर देशों की नीतयिं और राजनीतिका प्रभाव ।

## चरचा में क्यो?

केंद्र सरकार ने [दलाई लामा](#) की केंद्रीय तबिबती राहत समिति (Central Tibetan Relief Committee- CTRC) को 40 करोड़ रुपए के सहायता अनुदान प्रदान करने की योजना का वसितार कर वतिलीय वर्ष 2025-26 तक पाँच वर्षों के लयि बढा दया है ।

- यह योजना देश के 12 राज्यों/केंद्रशासति प्रदेशों में फैली तबिबती बसतयिं में रहने वाले तबिबती शरणार्थयिं के लयिप्रशासनकि खर्चों और सामाजकि कल्याण खर्चों को पूरा करने हेतु सीटीआरसी को 8 करोड़ रुपए का वार्षकि अनुदान प्रदान करती है ।



## केंद्रीय तबिबती राहत समिति:

- इसे वर्ष 2015 में शुरू कया गया था । समतिका मुख्य उद्देश्य नजी, स्वैच्छकि एजेंसयिं और तबिबती शरणार्थयिं के पुनरवास एवं उन्हें बसाने के

लिये भारत सरकार के प्रयासों के साथ समन्वय स्थापित करना है।

- इस समिति में **भारत, नेपाल और भूटान में स्थिति 53 तबिबती बसतियों** के सदस्य शामिल हैं।
- यह तबिबत की सांस्कृतिक और धार्मिक वरिष्ठता को संरक्षित करने तथा नरिवासित तबिबती लोगों के स्थायी लोकतांत्रिक समुदायों का निर्माण करने और उनके सतत् रखरखाव हेतु समर्पित है।
- यह सरकारों, **वशिष रूप से भारत, नेपाल और भूटान**, परोपकारी संगठनों और व्यक्तियों की उदार अंतर्राष्ट्रीय सहायता पर निर्भर है।
- सभी CTRC गतिविधियों **नदिशक मंडल की सहमति और समर्थन तथा TPIE (नरिवासन में तबिबती संसद)** से अनुमोदन के साथ की जाती हैं।
- TPIE का मुख्यालय **हमिाचल प्रदेश के कांगडा ज़िले के धर्मशाला** में है, जिसके अनुसार पूरे **भारत में 1 लाख से अधिक तबिबती** बसे हुए हैं।

## तबिबती शरणार्थियों के पलायन का कारण:

- वर्ष 1912 से वर्ष 1949 में चीन के जनवादी गणराज्य की स्थापना तक किसी भी चीनी सरकार द्वारा चीन के **तबिबत स्वायत्त क्षेत्र** (Tibet Autonomous Region- TAR) पर नियंत्रण स्थापित नहीं किया गया।
- कई तबिबतियों का कहना है कि वे उस समय के अधिकांश समय अनविर्य रूप से स्वतंत्र थे और वर्ष 1950 में पीपुल्स लबरेशन आर्मी द्वारा TAR पर कब्जा करने के बाद वहाँ चीन के शासन का वे वरिध करते रहे।
- वर्ष 1951 तक अकेले दलाई लामा की सरकार ने इस भूमि/क्षेत्र पर शासन किया।
- तबिबत तब तक "चीन" के अंतर्गत नहीं था जब तक कि माओत्से तुंग की पीपुल्स लबरेशन आर्मी ( **People's Liberation Army- PLA**) ने इस क्षेत्र में अपने सैनिकों के साथ मार्च नहीं किया।
- इसे अक्सर तबिबती लोगों और तीसरे पक्ष के टपिणीकारों द्वारा "सांस्कृतिक नरसंहार" (Cultural Genocide) के रूप में वर्णित किया गया है।
- वर्ष 1959 का असफल तबिबती वदिरोह, जिसमें तबिबतियों ने चीन की सरकार को उखाड़ फेंकने के प्रयास में वदिरोह किया तथा यह 14वें दलाई लामा के भागकर भारत आने का कारण बना।
- 29 अप्रैल, 1959 में दलाई लामा द्वारा उत्तर भारतीय हलि स्टेशन मसूरी में तबिबती नरिवासन प्रशासन (Tibetan Exile Administration) की स्थापना की गई।
- इसे आध्यात्मिक दलाई लामा के केंद्रीय तबिबती प्रशासन (Central Tibetan Administration- CTA) का नाम दिया गया है जो स्वतंत्र तबिबत की सरकार की नरितरता का परणाम था।
- मई 1960 में CTA को धर्मशाला में स्थानांतरित कर दिया गया।

## भारत की तबिबत नीति:

- तबिबत वर्षों से भारत का एक अचछा पड़ोसी रहा है, क्योंकि भारत की अधिकांश सीमाओं सहित 3500 कर्मी. LAC तबिबती स्वायत्त क्षेत्र के साथ जुड़ा है, न कि शेष चीन के साथ।
- वर्ष 1914 में चीन और तबिबत के परतनिधियों ने बरटिश भारत के साथ शामिल सम्मेलन पर हस्ताक्षर किये, जिसके तहत सीमाओं को चहिनति किया गया।
- हालाँकि वर्ष 1950 में चीन द्वारा तबिबत के अधग्रहण के बाद चीन ने इस सम्मेलन और मैकमोहन रेखा को अस्वीकार कर दिया, जिसने दोनों देशों को वभिाजति किया था।
- इसके अलावा वर्ष 1954 में भारत ने चीन के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किये, जिसमें तबिबत को 'चीन के तबिबत क्षेत्र' के रूप में मान्यता देने पर सहमति हुई।
- वर्ष 1959 में तबिबती वदिरोह के बाद 'दलाई लामा' (तबिबती लोगों के आध्यात्मिक नेता) और उनके कई अनुयायी भारत आ गए।
- पूर्व प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने उन्हें और तबिबती शरणार्थियों को आश्रय दिया तथा नरिवासन में तबिबती सरकार की स्थापना में मदद की।
- आधिकारिक भारतीय नीति यह है कि दलाई लामा एक आध्यात्मिक नेता हैं और भारत में एक लाख से अधिक नरिवासित लोगों वाले तबिबती समुदाय को किसी भी राजनीतिक गतिविधि की अनुमति नहीं है।
- भारत और चीन के बीच बढ़ते तनाव की स्थिति में भारत की तबिबत नीति में बदलाव आया है।
  - नीति में यह बदलाव सार्वजनिक मंचों पर दलाई लामा के साथ सक्रिय रूप से संलग्न होने वाली भारत सरकार की नीतिको चहिनति करता है।

## स्रोत: द हट्टि